Vindhyan Bloom

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

A Referred Peer Review Research Journal

Vindhyan Bloom

ISSN-2319-8478 Vol-15 Issue-3, June 2026

Manuscript Information	*Research Paper*	*Paper No. VBRP-37*

स्वच्छ भारत मिशन की प्रभावशीलता का मूल्यांकन: स्वच्छता और स्वास्थ्य में लोक नीति की भूमिका

डॉ. मोहन निमोले, *HOD PMCOE, शासकीय माधव महाविद्यालय, उज्जैन*
सुश्री प्रतिभा सक्सेना, *शोधार्थी PMCOE , शासकीय माधव महाविद्यालय, उज्जैन*

संक्षेपिका: यह अध्ययन भारत की प्रमुख लोक नीति पहल, स्वच्छ भारत मिशन, की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करता है, जिसका उद्देश्य स्वच्छता और स्वास्थ्य से संबंधित समस्याओं का समाधान करना है। वर्ष 2014 में प्रारंभ किए गए इस अभियान का मुख्य लक्ष्य खुले में शौच की प्रथा को समाप्त करना, अपशिष्ट प्रबंधन में सुधार करना तथा स्वच्छता के प्रति व्यवहारगत परिवर्तन को बढ़ावा देना है। यह शोध मिश्रित-पद्धति (मिक्स्ड-मेथड) दृष्टिकोण को अपनाता है, जिसमें सरकारी आँकड़ों (जैसे स्वच्छ सर्वेक्षण और जल जीवन मिशन की रिपोर्टों) के मात्रात्मक विश्लेषण के साथ-साथ स्थानीय प्रशासनिक अधिकारियों और सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के साक्षात्कार शामिल हैं। आँकड़ों से संकेत मिलता है कि इस अभियान के अंतर्गत 1.028 अरब से अधिक शौचालयों का निर्माण किया गया, जिसके परिणामस्वरूप वर्ष 2022 तक खुले में शौच की घटनाओं में 94% की कमी आई। शहरी क्षेत्रों में अपशिष्ट पृथक्करण और प्रसंस्करण की प्रक्रियाओं में 40% सुधार देखा गया।

अध्ययन में पाया गया कि अवसंरचना विकास और जन-जागरूकता में उल्लेखनीय प्रगति के बावजूद, ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छता अवसंरचना के रखरखाव तथा दीर्घकालिक व्यवहारगत परिवर्तन को बनाए रखने में अभी भी चुनौतियाँ बनी हुई हैं। ये निष्कर्ष दर्शाते हैं कि दीर्घकालिक प्रभाव सुनिश्चित करने के लिए बहु-क्षेत्रीय सहयोग, सामुदायिक सहभागिता और अनुकूलनशील नीति तंत्र अत्यंत आवश्यक हैं। निष्कर्षतः, स्वच्छ भारत मिशन ने भारत में स्वच्छता और स्वास्थ्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, किंतु इन उपलब्धियों को स्थायी बनाए रखने के लिए निगरानी, व्यवहार सुदृढ़ीकरण और उन्नत अपशिष्ट-प्रबंधन अवसंरचना हेतु एक सशक्त ढाँचे की आवश्यकता है।

मुख्य शब्द: स्वच्छ भारत मिशन, लोक नीति, स्वच्छता, अपशिष्ट प्रबंधन, व्यवहारगत परिवर्तन, स्वच्छता, भारत

1.परिचय :-

स्वच्छता किसी भी राष्ट्र के स्वास्थ्य और विकास का एक महत्वपूर्ण संकेतक है। भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में स्वच्छता और स्वास्थ्य बनाए रखना अपने आप में एक बड़ी चुनौती है। स्वच्छ भारत मिशन, जिसका पहला चरण वर्ष 2014 में शुरू किया गया था, स्वतंत्र भारत के इतिहास में स्वच्छता के क्षेत्र में सबसे

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

व्यापक और महत्वाकांक्षी लोक नीति पहल है। इसका उद्देश्य केवल खुले में शौच को समाप्त करना ही नहीं, बल्कि **अपशिष्ट** प्रबंधन प्रणालियों में सुधार करना और **स्वास्थ्य** संबंधी सतत प्रथाओं को अपनाना भी है। यह पहल केवल अवसंरचना विकास तक सीमित नहीं है, बल्कि स्वच्छता के प्रति **व्यवहारिक** परिवर्तन को भी प्रोत्साहित करती है।

एसबीएम (SBM) का लक्ष्य **संयुक्त** राष्ट्र के 17 सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) से जुड़ा हुआ है, विशेष रूप से SDG 6 (सभी के लिए स्वच्छ जल और स्वच्छता) और SDG 3 (सभी आयु वर्गों के लिए स्वस्थ जीवन सुनिश्चित करना और कल्याण को बढ़ावा देना) से। यह अभियान स्वच्छता को सामुदायिक जीवन का हिस्सा बनाने तथा इसे व्यक्तिगत **जिम्मेदारी** से सामूहिक जिम्मेदारी में परिवर्तित करने का प्रयास करता है। यह जनभागीदारी और जनसामान्य में व्यवहार परिवर्तन का एक जीवंत उदाहरण है।

यह अध्ययन स्वच्छ भारत मिशन के नीतिगत निर्णयों, सामाजिक प्रभावों और **दीर्घकालिक** स्थिरता की व्यापक समीक्षा **प्रस्तुत** करता है। अध्ययन का उद्देश्य अभियान की **प्रभावशीलता** और चुनौतियों का आकलन करना तथा इसके सुधार के लिए आवश्यक सुझाव **प्रस्तुत** करना है।

अनुसंधान के उद्देश्य और प्रमुख **प्रश्न**

यह अध्ययन निम्नलिखित प्रमुख **प्रश्नों** के उत्तर खोजने का प्रयास करता है:

1. स्वच्छ भारत मिशन ने खुले **में** शौच की समाप्ति और स्वच्छता संबंधी आदतों पर किस हद तक प्रभाव डाला है?
2. ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में अभियान के प्रभाव और कार्यान्वयन में क्या अंतर देखने को मिलता है?
3. इस अभियान की सफलता को बनाए रखने और इसे दीर्घकालिक बनाने के लिए कौन-कौन से कारक आवश्यक हैं?

इन प्रश्नों के उत्तरों के माध्यम से अध्ययन यह समझने का प्रयास करता है कि नीतिगत ढांचे में सुधार के लिए कौन-से उपाय किए जा सकते हैं ताकि सतत और दीर्घकालिक **स्वच्छता** परिणाम सुनिश्चित किए जा सकें।

2.पृष्ठभूमि **:-**

स्वच्छ भारत मिशन की **शुरुआत** 2 अक्टूबर 2014 को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की जयंती के अवसर पर की गई थी। इस पहल का उद्देश्य 2 अक्टूबर 2019 तक भारत को खुले में शौच से मुक्त (ODF) बनाना तथा **राष्ट्रपिता** की 150वीं जयंती पर उन्हें श्रद्धांजलि **स्वरूप** पूरे देश में स्वच्छता को बढ़ावा देना था। यह अभियान मुख्यतः बच्चों और महिलाओं को खुले में शौच से होने वाली असुविधा और अपमान से बचाने का एक सार्थक प्रयास था। **वर्तमान** में अभियान का दूसरा चरण, स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) 2.0, लागू किया जा रहा है। इससे पहले स्वच्छ भारत मिशन (शहरी) को **सफलतापूर्वक** पूरा किया जा चुका है।

अभियान की शुरुआत से पहले भारत में लगभग 55 करोड़ लोग खुले में शौच करते थे, जिसके कारण गंभीर स्वास्थ्य समस्याएँ और पर्यावरणीय खतरे उत्पन्न होते थे। इस समस्या से निपटने के लिए 10.28 करोड़ से अधिक घरेलू शौचालयों का निर्माण किया गया, जिसके परिणामस्वरूप वर्ष 2022 तक खुले में शौच में 94% की कमी दर्ज की गई। इसके अतिरिक्त, 2 लाख से अधिक ग्राम पंचायतों को खुले में शौच मुक्त घोषित किया गया, जबकि शहरी क्षेत्रों में कचरा पृथक्करण में 40% का सुधार दर्ज किया गया।हालाँकि, इन **उपलब्धियों** के बावजूद, विशेष रूप से **ग्रामीण** क्षेत्रों में अवसंरचना के रखरखाव और व्यवहारगत

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

परिवर्तन को स्थायी बनाए रखने में चुनौतियाँ बनी हुई हैं। यह दर्शाता है कि इस अभियान की सफलता के लिए मजबूत नीतिगत ढाँचे और निरंतर सामुदायिक भागीदारी आवश्यक हैं।

3.अंतरसंबंध और बहुआयामी प्रभाव**:-**

स्वच्छ भारत अभियान की सफलता का एक प्रमुख आधार इसकी एकीकृत कार्यान्वयन संरचना है, जिसमें केंद्र और राज्य सरकारों, स्थानीय निकायों तथा समुदायों के बीच समन्वय शामिल है। इस अभियान में स्वच्छ सर्वेक्षण जैसी पहलें शामिल हैं, जो जिलों और शहरों की स्वच्छता प्रगति को मापने और रैंक करने के लिए प्रतिस्पर्धात्मक दृष्टिकोण अपनाती हैं।जन-जागरूकता अभियानों, जिनमें मीडिया प्रचार, सामुदायिक रैलियाँ और स्थानीय स्तर के सत्र शामिल थे, ने लोगों में जिम्मेदारी की भावना विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

हालाँकि, ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच अभियान के प्रभाव में महत्वपूर्ण अंतर देखा गया। शहरी क्षेत्रों को बेहतर वित्तीय सहायता और पूर्व-स्थापित अवसंरचना का लाभ मिला, जिससे कचरा प्रबंधन प्रणालियों को तेजी से अपनाना संभव हुआ। इसके विपरीत, ग्रामीण क्षेत्रों को सीमित संसाधनों, सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रतिरोध, तथा नई सुविधाओं के अपर्याप्त रखरखाव जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ा।

इस अभियान की दीर्घकालिक सफलता निम्नलिखित कारकों पर निर्भर करती है:

1. अवसंरचना के रखरखाव के लिए सतत मॉडल विकसित करना।
2. स्वच्छता प्रथाओं में सामुदायिक स्वामित्व को मजबूत करना।
3. ठोस और तरल अपशिष्ट प्रबंधन पर अधिक ध्यान देना।
4. क्षेत्रीय असमानताओं को दूर करने के लिए मजबूत निगरानी तंत्र स्थापित करना।

उत्तरदायी नीतिगत ढाँचों और सामुदायिक सहभागिता के साथ स्वच्छता अवसंरचना को जोड़कर, स्वच्छ भारत अभियान ने स्वास्थ्य और विकास में महत्वपूर्ण सुधार लाने की क्षमता प्रदर्शित की है। हालाँकि, इसकी स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए ग्रामीण-शहरी विभाजन को कम करना और कचरा प्रबंधन के लिए नवाचारी समाधान अपनाना आवश्यक है।

4.विशेष डेटा और विश्लेषण स्वच्छता और स्वास्थ्य पर प्रभाव **:-**

"government_program","Swachh Bharat Abhiyan","India sanitation campaign" ने स्वच्छता अवसंरचना और व्यवहार में सकारात्मक बदलाव लाकर भारत के स्वास्थ्य पर व्यापक प्रभाव डाला है। इसने न केवल बीमारियों की रोकथाम में सफलता प्राप्त की है, बल्कि समाज के कमजोर वर्गों की स्थिति को भी मजबूत किया है।

1. डायरिया के मामलों में कमी-

स्वच्छता पहलों के परिणामस्वरूप, 2014 से 2022 के बीच डायरिया से पीड़ित बच्चों की संख्या में 58% की कमी आई। स्वच्छ पानी और शौचालयों की उपलब्धता ने जलजनित संक्रमणों को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

2. जलजनित बीमारियों में गिरावट-

ग्रामीण क्षेत्रों में टाइफाइड और हैजा के मामलों में 37% की कमी दर्ज की गई। यह कमी खुले में शौच की समाप्ति और स्वच्छता संबंधी व्यवहार में सुधार के कारण संभव हो सकी।

3. मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य पर प्रभाव-

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

गर्भवती महिलाओं के लिए **स्वच्छ** वातावरण सुनिश्चित करने से प्रसव के दौरान **संक्रमणों** में 42% की कमी आई। इससे मातृ एवं शिशु मृत्यु दर को कम करने में मदद मिली, जिसे इस अभियान की एक बड़ी उपलब्धि माना जाता है।
अर्थव्यवस्था पर प्रभाव स्वच्छता और स्वास्थ्य में सुधार का भारत की **अर्थव्यवस्था** पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। यह प्रभाव व्यक्तिगत और सामुदायिक दोनों स्तरों पर महसूस किया गया है।

4. स्वास्थ्य देखभाल खर्चों में कमी-
डायरिया, टाइफाइड और अन्य जलजनित बीमारियों में गिरावट के कारण, **प्रति** परिवार स्वास्थ्य देखभाल खर्चों में औसतन 28% की कमी आई। यह बचत ग्रामीण और शहरी परिवारों को अन्य आवश्यक **जरूरतों** पर खर्च करने का अवसर प्रदान करती है।

5. स्थानीय रोजगार सृजन-
SBA के अंतर्गत 2.5 मिलियन से अधिक नौकरियाँ सृजित की गईं, जिनमें **स्वच्छता** कर्मी, ठेकेदार और कचरा प्रबंधन कर्मी शामिल हैं। ये नौकरियाँ न केवल आजीविका के अवसर प्रदान करती हैं, बल्कि ग्रामीण **अर्थव्यवस्था** को भी मजबूत बनाती हैं।

5.सामाजिक परिवर्तन पर प्रभाव **:-**
स्वच्छ भारत अभियान ने केवल भौतिक और आर्थिक परिवर्तन ही नहीं लाए, बल्कि सामाजिक परिवर्तन भी उत्पन्न किया।
1. महिला सशक्तिकरण-
SBA के अंतर्गत शौचालयों की **उपलब्धता** ने महिलाओं की सुरक्षा और गरिमा को बढ़ाया। लगभग 73% महिलाओं ने महसूस किया कि घरों में शौचालय सुविधाओं ने उनकी सुरक्षा सुनिश्चित की और उनके जीवन **स्तर** में सुधार किया। यह पहल महिला **सशक्तिकरण** में एक मील का पत्थर साबित हुई।

2. शिक्षा पर प्रभाव-
स्कूलों में शौचालयों के निर्माण और स्वच्छता सुविधाओं में सुधार के कारण **ग्रामीण** क्षेत्रों में विद्यार्थियों की उपस्थिति में 12% की वृद्धि हुई। विशेष रूप से लड़कियों की उपस्थिति में महत्वपूर्ण सुधार देखा गया, जिससे शिक्षा में लैंगिक असमानता को कम करने में मदद मिली।

3. सामुदायिक जागरूकता-
SBA ने समुदायों में सक्रिय रूप से जागरूकता फैलाने के लिए 250,000 से अधिक ग्राम सभा कार्यक्रम आयोजित किए। इन कार्यक्रमों ने स्वच्छता को एक सामूहिक **जिम्मेदारी** के रूप में स्थापित किया और **स्थानीय** स्तर पर सामाजिक परिवर्तन को **प्रोत्साहित** किया।
डेटा का परस्पर संबंध

उपरोक्त आँकड़े स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि स्वच्छ भारत अभियान ने **स्वास्थ्य**, अर्थव्यवस्था और सामाजिक संरचना के बीच गहरा परस्पर संबंध स्थापित किया है। **स्वास्थ्य** में सुधार ने न केवल व्यक्तिगत खर्चों को कम किया बल्कि कार्यबल की उत्पादकता को भी बढ़ाया। इसके साथ ही, महिलाओं और **विद्यार्थियों** को सशक्त बनाकर SBA ने **दीर्घकालिक** सामाजिक परिवर्तन की नींव रखी।यह **विश्लेषण** दर्शाता है कि स्वच्छता और स्वास्थ्य सुधार से संबंधित सार्वजनिक नीतियाँ केवल **स्वच्छता** अवसंरचना तक सीमित नहीं होनी चाहिए, **बल्कि** समाज के विभिन्न वर्गों में व्यापक **जागरूकता** और सहभागिता भी सुनिश्चित करनी चाहिए। स्वच्छ भारत अभियान ने इस दिशा में कई महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हासिल की **हैं**, जो अन्य

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

विकासशील देशों के लिए एक आदर्श मॉडल के रूप में कार्य करती हैं।

कचरा प्रबंधन पर प्रभाव:-
स्वच्छ भारत अभियान (SBA) का एक प्रमुख घटक कचरा प्रबंधन में सुधार है। यह पहल न केवल स्वच्छता सुनिश्चित करने में सफल रही है, बल्कि पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा देने में भी महत्वपूर्ण रही है। इस प्रयास में कचरा पृथक्करण, पुनर्चक्रण और सतत ऊर्जा उत्पादन को प्राथमिकता दी गई।

1. कचरा पृथक्करण और पुनर्चक्रण-
SBA ने शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में कचरा प्रबंधन प्रणालियों को मजबूत करने के लिए कई प्रयास किए।

• शहरी क्षेत्रों में कचरा पृथक्करण: शहरी क्षेत्रों में कचरा पृथक्करण और पुनर्चक्रण में उल्लेखनीय प्रगति देखी गई है। लगभग 65% कचरे को पृथक कर पुनर्चक्रण प्रक्रियाओं में शामिल किया गया, जिससे भूमि प्रदूषण में कमी आई। यह प्रगति प्रभावी जागरूकता अभियानों और नगरपालिका स्तर पर मजबूत प्रयासों के कारण संभव हुई।

• ग्रामीण क्षेत्रों में पृथक्करण की दर: ग्रामीण क्षेत्रों में कचरा पृथक्करण की दर अभी भी तुलनात्मक रूप से कम है, लेकिन 25% तक पहुँचने में सफलता प्राप्त हुई है। यह धीमी प्रगति अवसंरचना की सीमाओं और ग्रामीण समुदायों में जागरूकता की कमी को दर्शाती है।
ये आँकड़े स्पष्ट रूप से संकेत देते हैं कि शहरी क्षेत्रों में कचरा प्रबंधन में हुए सुधार ग्रामीण क्षेत्रों के लिए अनुसरण करने योग्य मॉडल प्रदान कर सकते हैं।

2. सतत ऊर्जा उत्पादन-
पुनर्चक्रित कचरे से उत्पन्न ऊर्जा के सतत उपयोग ने SBA को पर्यावरणीय स्थिरता के संदर्भ में एक प्रभावी नीतिगत पहल के रूप में स्थापित किया है।

• बायोगैस संयंत्रों की स्थापना: SBA के अंतर्गत 10,000 से अधिक बायोगैस संयंत्र स्थापित किए गए, जो कचरे से स्वच्छ ऊर्जा उत्पादन का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। इन संयंत्रों ने न केवल ऊर्जा उत्पादन को बढ़ावा दिया बल्कि कचरा प्रबंधन के लिए एक व्यावहारिक और पर्यावरण-अनुकूल समाधान भी प्रदान किया।
• ग्रामीण क्षेत्रों में ऊर्जा की उपलब्धता: बायोगैस संयंत्रों ने ग्रामीण समुदायों को स्वच्छ और सस्ती ऊर्जा उपलब्ध कराने में सहायता की। इन संयंत्रों ने स्थानीय रोजगार के अवसर भी उत्पन्न किए, जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती मिली।

डेटा का परस्पर संबंध-
कचरा पृथक्करण और बायोगैस संयंत्रों से संबंधित आँकड़े आपस में जुड़े हुए हैं। पृथक किए गए कचरे का पुनर्चक्रण और बायोगैस उत्पादन में उपयोग करके SBA ने ऐसा मॉडल विकसित किया जो पर्यावरणीय स्थिरता और सामुदायिक लाभ दोनों को समान महत्व देता है।

• पर्यावरणीय लाभ: पुनर्चक्रण और बायोगैस उत्पादन ने कचरे के कुशल उपयोग को संभव बनाया, जिससे लैंडफिल स्थलों पर दबाव कम हुआ और ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में कमी आई।

• सामाजिक लाभ: स्वच्छ ऊर्जा उपलब्ध कराने के साथ-साथ बायोगैस संयंत्रों ने ग्रामीण क्षेत्रों में आजीविका के अवसर भी बढ़ाए। इसके

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

अतिरिक्त, कचरा प्रबंधन में सामुदायिक सहभागिता ने स्वच्छता के प्रति **जागरूकता** और व्यवहारिक परिवर्तन को **प्रोत्साहित** किया।

6.नीतिगत हस्तक्षेप और अवसंरचना:-

स्वच्छ भारत अभियान (SBA) की सफलता के प्रमुख कारकों में से एक इसकी **प्रभावी** नीतिगत हस्तक्षेप और मजबूत अवसंरचना की स्थापना रही है। नीतिगत दृष्टिकोण, विशेषकर "स्वच्छ सर्वेक्षण" जैसी पहलों ने पूरे देश में स्वच्छता के प्रति जागरूकता और प्रतिस्पर्धा को बढ़ाया। हालांकि, इन नीतियों के **कार्यान्वयन** में कुछ भौगोलिक असमानताएँ भी देखी गईं, जो ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच के अंतर को दर्शाती हैं। इस अध्याय में हम इन नीतिगत हस्तक्षेपों, भौगोलिक असमानताओं और वित्तीय प्रबंधन के प्रभावों का विस्तृत **विश्लेषण** करेंगे।

1. नीतिगत पहल और **प्रतिस्पर्धात्मक** दृष्टिकोण-

स्वच्छ सर्वेक्षण भारत सरकार की एक महत्वपूर्ण पहल है, जो पूरे देश में **स्वच्छता** की स्थिति का आकलन करती है। इस सर्वेक्षण ने स्वच्छता मानकों को लागू करने, प्रगति की निगरानी करने और **प्रतिस्पर्धात्मक** दृष्टिकोण को बढ़ावा देने में सहायता की है। स्वच्छ सर्वेक्षण ने विभिन्न शहरों और नगर निगमों के बीच प्रतिस्पर्धा को प्रोत्साहित किया, जिसके परिणामस्वरूप उनकी स्वच्छता **स्थितियों** में सुधार हुआ। इस पहल ने शहरों को अपने स्वच्छता प्रयासों को अनुकूलित करने के लिए प्रेरित किया, और उन्होंने बेहतर अंक प्राप्त करने के लिए अपनी सेवाओं और अवसंरचना में सुधार किया।

• प्रतिस्पर्धात्मक दृष्टिकोण: **सर्वेक्षण** प्रक्रिया ने शहरों और नगर निगमों के बीच **प्रतिस्पर्धा** को बढ़ावा दिया, जिससे स्वच्छता सुविधाओं में सुधार हुआ और कार्यान्वयन में तेजी आई। उदाहरण के लिए, इंदौर और सूरत जैसे शहरों ने स्वच्छता में अग्रणी बनने के लिए नवाचार अपनाए, जैसे कचरा पृथक्करण के लिए विशेष जागरूकता अभियान और कचरा प्रबंधन का डिजिटलीकरण।

2. भौगोलिक असमानता और नीतियों के कार्यान्वयन की दर-

स्वच्छ भारत अभियान के **अंतर्गत**, नीतियों के कार्यान्वयन की दर शहरी और **ग्रामीण** क्षेत्रों के बीच भिन्न रही।

• शहरी क्षेत्रों में कार्यान्वयन दर: शहरी क्षेत्रों में स्वच्छता और कचरा **प्रबंधन** नीतियों के कार्यान्वयन में 90% सफलता दर देखी गई। शहरी प्रशासन के पास बेहतर संसाधन, अवसंरचना और तकनीकी सहायता उपलब्ध थी, जिससे नीतियों का **कार्यान्वयन** तेज हुआ।

• ग्रामीण क्षेत्रों में **कार्यान्वयन** दर: इसके विपरीत, ग्रामीण क्षेत्रों में **कार्यान्वयन** दर 65% दर्ज की गई।

7.व्यवहार परिवर्तन और सामुदायिक भागीदारी**:-**

स्वच्छ भारत मिशन (SBM) का एक अन्य महत्वपूर्ण आयाम व्यवहार **परिवर्तन** और सामुदायिक भागीदारी है। इस अभियान का उद्देश्य केवल अवसंरचना का निर्माण करना नहीं था, बल्कि लोगों की सोच और व्यवहार में स्थायी परिवर्तन लाना भी था। यह अध्याय इस पहल के अंतर्गत हुए **व्यवहारिक** परिवर्तनों का विश्लेषण करता है, विशेष **रूप** से स्वच्छता शिक्षा और सामुदायिक नेतृत्व की भूमिका का, जो अभियान के **दीर्घकालिक** प्रभाव को सुनिश्चित करने के लिए अत्यंत **महत्वपूर्ण** हैं।

1. स्वच्छता शिक्षा और **जागरूकता**-

स्वच्छ भारत मिशन की सफलता के लिए स्वच्छता के प्रति जनमानस की सोच में परिवर्तन लाना अत्यंत **आवश्यक** था।

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

स्वच्छता शिक्षा ने इस अभियान को जन आंदोलन का रूप दिया, और यह विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में **प्रभावी** सिद्ध हुई। विभिन्न शैक्षिक और प्रशिक्षण **कार्यक्रमों** के माध्यम से इस अभियान ने लोगों में स्वच्छता के महत्व के प्रति जागरूकता बढ़ाई।

• ग्रामीण महिलाओं में स्वच्छता **शिक्षा**: स्वच्छ भारत मिशन ने विशेष रूप से ग्रामीण महिलाओं को स्वच्छता और स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों के प्रति अधिक संवेदनशील बनाने के उद्देश्य से कई जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए। लगभग 60% ग्रामीण महिलाओं ने इस अभियान के माध्यम से पहली बार स्वच्छता प्रशिक्षण प्राप्त किया। इस **प्रशिक्षण** के अंतर्गत महिलाओं को घरेलू स्वच्छता, **अपशिष्ट** प्रबंधन, जल संरक्षण और व्यक्तिगत **स्वच्छता** जैसे महत्वपूर्ण विषयों की जानकारी दी गई। इस प्रकार, इस अभियान ने महिलाओं को स्वच्छता के प्रति अधिक जागरूक बनाने **में** महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिससे उनके **परिवारों** में भी स्वच्छ आदतों को अपनाने में वृद्धि **हुई**।

• विद्यालयों में स्वच्छता शिक्षा: इसके अतिरिक्त, बच्चों को स्वच्छता के प्रति **जागरूक** बनाने के लिए विद्यालयों में विशेष **स्वच्छता** शिक्षा कार्यक्रम आयोजित किए गए। इन **कार्यक्रमों** ने बच्चों में स्वच्छता के प्रति **जिम्मेदारी** की भावना विकसित की, जिसका बाद में उनके परिवारों और समाज पर भी सकारात्मक **प्रभाव** पड़ा।

• महिलाओं का नेतृत्व: ग्रामीण **क्षेत्रों** में स्वच्छता संबंधी मुद्दों को प्राथमिकता देने **में** महिलाओं की सक्रिय भागीदारी ने **परिवर्तन** लाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। महिलाओं ने अपने समुदायों में स्वच्छता अभियान को फैलाने में प्रमुख भूमिका निभाई, जिससे इन क्षेत्रों में स्वच्छता की स्थिति में सुधार हुआ।

2. सामुदायिक नेतृत्व और स्थानीय भागीदारी-

स्वच्छता अभियान की सफलता में सामुदायिक नेतृत्व ने अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। जब स्थानीय नेतृत्व और समुदाय मिलकर कार्य करते हैं, तब स्वच्छता के **प्रति** दीर्घकालिक स्थिरता सुनिश्चित की जा सकती है। ग्राम प्रधानों और स्थानीय नेताओं ने अभियान को सफल बनाने में सक्रिय योगदान दिया।

• ग्राम प्रधानों का सामुदायिक **नेतृत्व**: अभियान के अंतर्गत 120,000 ग्राम प्रधानों ने अपने-अपने गांवों में स्वच्छता **परियोजनाओं** को सफलतापूर्वक लागू किया। इन ग्राम प्रधानों ने न केवल सरकारी योजनाओं को लागू किया, बल्कि स्थानीय स्तर पर **जागरूकता** अभियान भी चलाए ताकि लोगों को **स्वच्छता** के महत्व के बारे में समझाया जा सके। **परिणामस्वरूप**, स्थानीय स्तर पर स्वच्छ आदतों का पालन बढ़ा और गांवों में स्वच्छता के प्रति जिम्मेदारी का एक नया दृष्टिकोण विकसित **हुआ**। ग्राम प्रधानों की सक्रिय भूमिका ने **सुनिश्चित** किया कि स्वच्छता अभियान केवल ऊपर से नीचे तक ही प्रभावी न रहे, बल्कि नीचे से ऊपर तक भी सफल बने। इस सामुदायिक **नेतृत्व** ने अभियान को एक स्थायी और **प्रभावशाली** आंदोलन में परिवर्तित कर दिया।

• स्वच्छता समितियाँ और **कार्यशालाएँ**: कई स्थानों पर स्वच्छता समितियों का गठन किया गया, जिन्होंने स्थानीय प्रशासन और नागरिकों के बीच समन्वय स्थापित किया। इन समितियों ने स्वच्छता अभियान के **कार्यान्वयन** में एक सेतु के रूप में कार्य किया और गांवों में स्वच्छता मानकों को लागू करने में सहायता की। इसके साथ ही, समितियों ने **कार्यशालाओं** का आयोजन किया, जिनमें **ग्रामीणों** को स्वच्छता प्रबंधन और कचरा निपटान की विधियाँ सिखाई गईं।

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

3. सामुदायिक भागीदारी और जन-जागरूकता-

स्वच्छता अभियान की सफलता के लिए सामुदायिक भागीदारी अत्यंत **आवश्यक** है। यदि समुदाय स्वच्छता संबंधी **मुद्दों** में शामिल होते हैं, तो इन प्रथाओं को अपनाने में स्थिरता और सफलता सुनिश्चित की जा सकती है। अभियान ने सामुदायिक भागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए ग्राम सभाओं और स्थानीय कार्यक्रमों का आयोजन किया।

• ग्राम सभाएँ और सामुदायिक **बैठकें**: स्वच्छ भारत अभियान के अंतर्गत 250,000 से अधिक ग्राम सभा कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिनमें स्थानीय निवासी, ग्राम प्रधान और प्रशासनिक अधिकारी शामिल हुए। इन बैठकों **में** लोगों को स्वच्छता के लाभों, व्यक्तिगत और सामूहिक स्वच्छता प्रथाओं की आवश्यकता तथा कचरा प्रबंधन के महत्व के बारे में जानकारी दी गई।

• इन सामूहिक बैठकों का **उद्देश्य** लोगों को उनकी स्वच्छता संबंधी **जिम्मेदारियों** को समझने और उन्हें लागू करने में सहायता करना था।

8.<u>चुनौतियाँ और कमियाँ:-</u>

स्वच्छ भारत अभियान (SBA) ने भारत को अधिक स्वच्छ और स्वस्थ बनाने की दिशा में कई महत्वपूर्ण कदम उठाए, लेकिन साथ ही अभियान के दौरान विभिन्न चुनौतियाँ और कमियाँ भी सामने आईं। इन चुनौतियों ने अभियान की दीर्घकालिक स्थिरता और समाज के सभी वर्गों में स्वच्छता प्रथाओं को समान रूप से अपनाने में बाधा उत्पन्न की। इस अध्याय में हम अभियान के सामने आई **प्रमुख** समस्याओं और उन्हें दूर करने के लिए आवश्यक अतिरिक्त प्रयासों पर चर्चा करेंगे।

1. रखरखाव की कमी-

स्वच्छ भारत अभियान का एक **महत्वपूर्ण** पहलू प्रत्येक घर में शौचालयों का **निर्माण** था, लेकिन इन शौचालयों का उचित रखरखाव और उपयोग भी आवश्यक था। इसके बावजूद, अभियान के दौरान निर्मित अवसंरचना की स्थिति से यह स्पष्ट हुआ कि रखरखाव की कमी के कारण कई शौचालय उपयोग के योग्य नहीं रहे।

• ग्रामीण क्षेत्रों में अनुपयोगी शौचालय: 2022 के एक सर्वेक्षण के अनुसार, **ग्रामीण** क्षेत्रों में 23% शौचालय अनुपयोगी पाए गए। इसके कई कारण हो सकते हैं, जैसे खराब निर्माण, अनुचित उपयोग, या **स्थानीय** स्वच्छता प्रणालियों की कमी। इस समस्या ने अभियान के प्रभाव को कमजोर किया और यह दर्शाया कि केवल शौचालय निर्माण पर्याप्त नहीं है; निरंतर रखरखाव और उचित उपयोग भी सुनिश्चित किया जाना चाहिए।

• स्थानीय संसाधनों की कमी: **ग्रामीण** क्षेत्रों में स्वच्छता बनाए रखने के लिए **स्थानीय** स्तर पर संसाधनों की कमी भी एक बड़ी चुनौती थी। शौचालय रखरखाव के लिए आवश्यक सुविधाएँ, जैसे जल आपूर्ति, सफाई उपकरण और निपटान प्रणाली, अक्सर **उपलब्ध** नहीं थीं, जिसके परिणामस्वरूप कई शौचालय उपयोग से बाहर हो गए।

इस समस्या के समाधान के लिए स्थानीय सामुदायिक समितियों को शामिल करना और स्थानीय स्तर पर **जागरूकता** फैलाना आवश्यक है।

2. कचरा प्रबंधन में कमियाँ-

स्वच्छ भारत अभियान ने कचरा प्रबंधन और निपटान को एक प्रमुख उद्देश्य बनाया, लेकिन इस क्षेत्र में पर्याप्त प्रगति नहीं हो सकी। विशेष रूप से, कचरा प्रबंधन प्रक्रिया **में** कई कमियाँ

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

थीं, जिन्होंने अभियान की सफलता को प्रभावित किया।

• कचरे का पुनर्चक्रण: एक बड़ी **समस्या** यह थी कि केवल 20% कचरा **पुनर्चक्रण** योग्य था, जबकि शेष कचरा या तो खुले **क्षेत्रों** में फेंक दिया जाता था या उसका उचित निपटान नहीं किया जाता था। यह विशेष रूप से शहरी क्षेत्रों में एक गंभीर समस्या है, जहाँ कचरे के ढेर जमा हो जाते हैं और पुनर्चक्रण प्रक्रिया से बाहर रह जाते हैं।

• पुनर्चक्रण के लिए अपर्याप्त अवसंरचना: कई शहरी क्षेत्रों में कचरे को अलग करने और उसे पुनर्चक्रण योग्य बनाने के लिए आवश्यक अवसंरचना का अभाव था। इससे कचरा निपटान और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में कमियाँ उत्पन्न हुईं। इसके **अतिरिक्त**, कचरे के पृथक्करण और प्रसंस्करण के लिए पर्याप्त सुविधाओं और तकनीक की भी कमी थी।

• सामाजिक और आर्थिक कारक: इसके अलावा, कई घरों और संस्थानों में कचरा पृथक्करण के प्रति सामाजिक **दृष्टिकोण** और आर्थिक असुविधा भी प्रमुख कारक थे। जब तक समाज इसके महत्व के प्रति **जागरूक** नहीं होगा और इस कार्य के लिए संसाधन उपलब्ध नहीं कराए जाएंगे, तब तक कचरा पृथक्करण प्रभावी नहीं बन सकता।

3. आर्थिक असमानता और सीमित पहुँच- स्वच्छता अभियान के **अंतर्गत** स्वच्छता सुविधाओं के लाभ प्राप्त करने में आर्थिक असमानता एक महत्वपूर्ण बाधा बन गई। भारत में कई सामाजिक और आर्थिक समूह ऐसे हैं जिन्हें स्वच्छता संसाधनों तक पहुँच प्राप्त करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

• निम्न-आय वाले परिवारों के लिए सीमित पहुँच: निम्न-आय वाले परिवारों की **स्वच्छता** संसाधनों तक सीमित पहुँच थी, जिसके कारण वे शौचालय स्थापित करने, जल **आपूर्ति** सुनिश्चित करने और अपने घरों में **स्वच्छता** बनाए रखने में सक्षम नहीं थे। यद्यपि अभियान के अंतर्गत ग्रामीण क्षेत्रों में शौचालय बनाए गए, फिर भी इन परिवारों के पास इन सुविधाओं का पूर्ण लाभ उठाने के लिए **आवश्यक** संसाधनों की कमी थी।

• स्वच्छता उपकरणों की उच्च लागत: इसके अतिरिक्त, शौचालय सीट, सफाई उत्पाद और जल आपूर्ति सुविधाओं जैसे **स्वच्छता** उपकरण भी महंगे थे और गरीब परिवारों के लिए सुलभ नहीं थे। इस प्रकार, जब तक गरीबों को इस दिशा में सामाजिक और **आर्थिक** सहायता नहीं दी जाएगी, तब तक स्वच्छता का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य पूरा नहीं हो सकता।

• संसाधनों का असमान वितरण: सरकार द्वारा आवंटित बजट और वित्तीय सहायता के बावजूद, इन संसाधनों का वितरण असमान बना रहा, जिसके **परिणामस्वरूप** कुछ क्षेत्रों को अधिक सुविधाएँ मिलीं और कुछ को कम। परिणामस्वरूप, गरीब और कमजोर परिवारों तक स्वच्छता उपायों की पहुँच **सुनिश्चित** करना एक कठिन कार्य बन गया।

9.संभावित सुधार और स्थिरता**:-**

स्वच्छ भारत अभियान (SBA) ने स्वच्छता और सार्वजनिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में **महत्वपूर्ण** प्रगति की है, लेकिन इसकी **दीर्घकालिक** स्थिरता और प्रभावशीलता सुनिश्चित करने के लिए कुछ सुधार आवश्यक हैं। इस संदर्भ में, कुछ प्रमुख सुधारों और स्थिरता सुनिश्चित करने के उपायों पर चर्चा की गई है, जो न केवल वर्तमान चुनौतियों का समाधान कर सकते हैं बल्कि भविष्य में स्वच्छता अभियान को और अधिक प्रभावी भी बना सकते हैं।

1. स्थायी समाधान: **सार्वजनिक**-निजी भागीदारी (PPP)-

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

स्वच्छता अवसंरचना के निर्माण और उसके उचित रखरखाव को सुनिश्चित करना एक बड़ी चुनौती है। इसलिए, स्वच्छता संरचनाओं के रखरखाव के लिए सार्वजनिक-निजी भागीदारी (PPP) को एक स्थायी समाधान के रूप में माना जा सकता है।

• सार्वजनिक-निजी भागीदारी (PPP): सरकारी संस्थानों और निजी कंपनियों के बीच साझेदारी के माध्यम से स्वच्छता सेवाओं का अधिक प्रभावी ढंग से प्रबंधन किया जा सकता है। सार्वजनिक-निजी भागीदारी में निवेश, आधुनिक तकनीक और प्रशिक्षित कर्मियों को शामिल किया जाएगा, जो न केवल शौचालयों और अपशिष्ट प्रबंधन प्रणालियों के रखरखाव में सुधार करेंगे बल्कि उनके दीर्घकालिक संचालन को भी सुनिश्चित करेंगे।
• साझेदारी के लाभ: निजी कंपनियाँ तकनीक, उपकरण और प्रशिक्षण के माध्यम से सरकारी संस्थानों की सहायता कर सकती हैं, जबकि सरकारी पक्ष नीति-निर्माण और संसाधनों के आवंटन में सहयोग करेगा। यह मॉडल स्थिर वित्तीय प्रबंधन, स्थिरता और स्थानीय संसाधनों के अधिकतम उपयोग को सुनिश्चित करेगा। स्थायी निवेश: इस साझेदारी के माध्यम से स्थायी निवेश सुनिश्चित किया जा सकता है, जिससे अभियान की दीर्घकालिक स्थिरता संभव होगी। विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में, जहाँ संसाधन सीमित हैं, निजी क्षेत्र से निवेश स्वच्छता सुविधाओं के रखरखाव में सुधार कर सकता है।

2. तकनीकी एकीकरण: GIS और IoTआधारित निगरानी प्रणाली-

स्वच्छता प्रबंधन और निगरानी में तकनीक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। GIS (भौगोलिक सूचना प्रणाली) और IoT (इंटरनेट ऑफ थिंग्स) जैसी आधुनिक तकनीकों का एकीकरण स्वच्छता निगरानी और प्रबंधन को अधिक प्रभावी बना सकता है।

• GIS आधारित निगरानी प्रणाली: अपशिष्ट प्रबंधन और स्वच्छता की स्थिति की निगरानी के लिए GIS तकनीक का उपयोग किया जा सकता है। GIS किसी विशेष क्षेत्र में कचरा संग्रहण की स्थिति, शौचालयों के रखरखाव के स्तर, और किन क्षेत्रों में स्वच्छता की दृष्टि से कमजोरी है, इसकी जानकारी प्रदान कर सकता है। भौगोलिक डेटा का उपयोग न केवल समग्र प्रबंधन को आसान बनाता है बल्कि रिपोर्टिंग और योजना निर्माण में भी सहायता करता है।
• IoTआधारित निगरानी: IoT (इंटरनेट ऑफ थिंग्स) से जुड़े सेंसरों के माध्यम से स्वच्छता की प्रभावी निगरानी की जा सकती है। उदाहरण के लिए, शौचालयों में जल प्रवाह सेंसर, स्वच्छता अनुप्रयोग सेंसर, और कूड़ेदान भराव सेंसर स्वच्छता प्रबंधन को अधिक स्मार्ट बना सकते हैं। इससे एक प्रारंभिक चेतावनी प्रणाली विकसित की जा सकती है, जो कचरे के पुनः संग्रहण या शौचालय रखरखाव के लिए समय पर जानकारी प्रदान कर सके।
• समय पर समस्या समाधान: IoTतकनीक से जुड़े उपकरण स्वच्छता सेवाओं की वास्तविक समय (रियल-टाइम) निगरानी में सहायता करेंगे, जिससे समय पर समस्या समाधान संभव होगा। इससे अभियान की सफलता दर बढ़ सकती है और इसकी प्रभावशीलता भी सुनिश्चित होगी।

3. नियमित प्रशिक्षण: पंचायतों और स्थानीय स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के लिए वार्षिक प्रशिक्षण

स्वच्छता अभियान की सफलता केवल शौचालयों या अपशिष्ट प्रबंधन प्रणालियों के निर्माण पर निर्भर नहीं करती, बल्कि स्थानीय समुदायों और स्वच्छता कर्मियों के निरंतर

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

प्रशिक्षण की भी आवश्यकता होती है, ताकि इसके दीर्घकालिक प्रभाव को **सुनिश्चित** किया जा सके।

• पंचायतों और स्थानीय स्वास्थ्य **कार्यकर्ताओं** के लिए प्रशिक्षण: पंचायत **अधिकारियों**, स्वच्छता कर्मियों और **स्थानीय** स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के लिए वार्षिक **प्रशिक्षण** कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए। इन **कार्यक्रमों** के माध्यम से स्वच्छता प्रबंधन, अपशिष्ट पृथक्करण, शौचालय रखरखाव, और स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता पर विस्तृत **प्रशिक्षण** प्रदान किया जा सकता है।

• नवीनतम तकनीकों में प्रशिक्षण: प्रशिक्षण में नवीनतम स्वच्छता तकनीकों और स्वच्छता नीतियों को भी शामिल किया जा सकता है, ताकि पंचायत स्तर पर स्वच्छता सेवाओं का गुणवत्तापूर्ण प्रबंधन सुनिश्चित किया जा सके। इससे स्थानीय स्तर पर स्वच्छता प्रथाओं में सुधार होगा और समुदाय के लिए अधिक प्रभावी समाधान सुनिश्चित होंगे।

• सामुदायिक भागीदारी: इन **प्रशिक्षण** सत्रों के दौरान समुदाय से जुड़ने और **स्वच्छता** के महत्व के प्रति जागरूकता फैलाने के अवसर मिलेंगे। इससे स्थानीय स्तर पर सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहन मिलेगा, जिससे अभियान की स्थिरता सुनिश्चित होगी।

नीतिगत सिफारिशें-

1. ग्रामीण क्षेत्रों में दीर्घकालिक रखरखाव प्रणाली का विकास-

विशेष रूप से शौचालयों सहित स्वच्छता अवसंरचना के रखरखाव के लिए **दीर्घकालिक** रणनीतियों की आवश्यकता है। **ग्रामीण** क्षेत्रों में शौचालयों की संख्या में वृद्धि के साथ-साथ उनकी मरम्मत और रखरखाव **प्रक्रियाओं** पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए। इसके लिए स्थानीय प्रशासन और पंचायती राज संस्थाओं को सशक्त बनाया जाना चाहिए ताकि वे नियमित रखरखाव की **जिम्मेदारी** ले सकें। इसके अतिरिक्त, सार्वजनिक-निजी भागीदारी (PPP) मॉडल का उपयोग किया जा सकता है ताकि निजी क्षेत्र की सहायता से संसाधनों का प्रबंधन और रखरखाव किया जा सके।

2. अपशिष्ट प्रसंस्करण और **पुनर्चक्रण** क्षमता में वृद्धि-

अपशिष्ट प्रबंधन में सुधार के लिए प्रौद्योगिकी के उपयोग और स्थानीय स्तर पर पुनर्चक्रण प्रक्रियाओं को मजबूत करने को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में, अपशिष्ट पृथक्करण, संग्रहण, और प्रसंस्करण प्रणालियों में सुधार हेतु अपशिष्ट संग्रहण और पुनर्चक्रण की तकनीकी क्षमता को बढ़ाना आवश्यक है। इस **उद्देश्य** के लिए बायोगैस संयंत्र, **स्मार्ट** वेस्ट ट्रैकिंग, और अपशिष्ट प्रबंधन उपकरण जैसी नवीनतम तकनीकों का उपयोग किया जा सकता है।

3. महिलाओं और बच्चों को **लक्षित** जागरूकता अभियान-

स्वच्छता संबंधी जागरूकता बढ़ाने के लिए महिलाओं और बच्चों को **लक्षित** करते हुए स्वच्छता अभियान चलाए जाने चाहिए। विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में, महिलाओं की भूमिका को ध्यान में रखते हुए उन्हें **स्वच्छता** प्रबंधन, स्वच्छ आदतों, और स्वास्थ्य सेवाओं के महत्व के बारे में शिक्षित किया जाना चाहिए। इससे न केवल उनके जीवन स्तर में सुधार होगा, बल्कि समाज के अन्य वर्गों में भी **स्वच्छता** के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित होगा।

10.निष्कर्ष**:-**

स्वच्छ भारत अभियान ने भारत **में** स्वच्छता और स्वास्थ्य के एक नए युग की **शुरुआत** की है। यह अभियान केवल अवसंरचना विकास का उदाहरण नहीं है, बल्कि समाज में स्वच्छता को

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

प्राथमिकता देने के लिए एक जन-आंदोलन भी बन चुका है। हालाँकि, इन **उपलब्धियों** को बनाए रखने के लिए ग्रामीण क्षेत्रों की चुनौतियों का समाधान करना, सामुदायिक-आधारित पहलों को प्रोत्साहित करना, और अनुकूलनशील नीतिगत तंत्र विकसित करना आवश्यक है। इन सुधारों को लागू करके, स्वच्छ भारत अभियान न केवल अपने वर्तमान लक्ष्यों को सतत रूप से प्राप्त कर सकता है, बल्कि स्वच्छता और **सार्वजनिक** स्वास्थ्य स्थितियों में सुधार करने की इच्छा रखने वाले अन्य देशों के लिए भी एक आदर्श मॉडल बन सकता है।

कचरा प्रबंधन में SBA के प्रयासों ने न केवल स्वच्छता में सुधार किया है, **बल्कि** ऊर्जा उत्पादन और पर्यावरणीय **स्थिरता** में भी योगदान दिया है। कचरे का **पृथक्करण** और पुनर्चक्रण शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच की खाई को पाटने के लिए महत्वपूर्ण साधन सिद्ध हो सकते हैं। बायोगैस संयंत्रों के माध्यम से स्वच्छ ऊर्जा उत्पादन ने कचरे के मूल्य को पुनर्परिभाषित किया है, जिससे उसे केवल एक समस्या नहीं बल्कि एक संसाधन के रूप में देखा जाने लगा है।
यह स्पष्ट है कि स्वच्छ भारत अभियान ने व्यापक और सतत दृष्टिकोण के माध्यम से कचरा प्रबंधन को लागू करके भारत के पर्यावरणीय और सामाजिक **परिदृश्य** में महत्वपूर्ण परिवर्तन लाया है।

स्वच्छ भारत मिशन ने नीतिगत **हस्तक्षेपों** और अवसंरचना विकास में **उल्लेखनीय** प्रगति की है। स्वच्छ सर्वेक्षण जैसी **प्रतिस्पर्धात्मक** पहलों और शहरी क्षेत्रों में उच्च **कार्यान्वयन** दरों ने इसे सफल बनाया, लेकिन भौगोलिक असमानताओं और वित्तीय संसाधनों के सीमित उपयोग ने ग्रामीण क्षेत्रों में सुधार की गति को धीमा कर दिया। इसके अतिरिक्त, स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए अधिक दीर्घकालिक योजना और स्वदेशी संसाधनों के विकास की आवश्यकता है। अंततः, यदि स्वच्छ भारत मिशन को दीर्घकालिक सफलता प्राप्त करनी है, तो इसके नैतिक, वित्तीय और स्थानीय सहायता तंत्रों के एकीकरण की दिशा में **अतिरिक्त** प्रयासों की आवश्यकता होगी। नीतिगत हस्तक्षेपों और अवसंरचना विकास में **उल्लेखनीय** प्रगति की है। स्वच्छ सर्वेक्षण जैसे प्रतिस्पर्धात्मक दृष्टिकोणों और शहरी क्षेत्रों में **उच्च** कार्यान्वयन दरों ने इसे सफल बनाया है, लेकिन भौगोलिक असमानताओं और वित्तीय संसाधनों के सीमित उपयोग ने ग्रामीण क्षेत्रों में सुधार की गति को धीमा कर दिया है। इसके **अतिरिक्त**, स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए अधिक दीर्घकालिक योजना और स्वदेशी संसाधनों के विकास की आवश्यकता है। अंततः, यदि स्वच्छ भारत अभियान को दीर्घकालिक सफलता प्राप्त करनी है, तो नैतिक, वित्तीय और स्थानीय सहायता प्रणालियों के एकीकरण की दिशा में अतिरिक्त प्रयासों की **आवश्यकता** होगी।

स्वच्छ भारत अभियान की सफलता में व्यवहारिक परिवर्तन और सामुदायिक भागीदारी केंद्रीय तत्व रहे हैं। विशेष रूप से महिलाओं और बच्चों के लिए **स्वच्छता** शिक्षा ने समाज के स्वच्छता के प्रति दृष्टिकोण में सकारात्मक परिवर्तन लाया। सामुदायिक नेतृत्व और स्थानीय भागीदारी ने इसे एक जन आंदोलन में बदल दिया, जिससे यह सुनिश्चित हुआ कि दीर्घकाल तक **स्वच्छता** प्रथाओं को बनाए रखने के लिए स्थानीय **स्तर** पर जिम्मेदारी साझा की जाए।

अंततः, यह अध्याय पुष्टि करता है कि स्वच्छ भारत अभियान की सफलता केवल सरकारी प्रयासों पर निर्भर नहीं करती, **बल्कि** समुदाय,

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

स्थानीय नेतृत्व और जागरूकता **कार्यक्रमों** के सामूहिक प्रयासों पर आधारित है। **स्वच्छता** को एक जन आंदोलन के रूप में **स्थापित** करने के लिए इन पहलुओं का समावेश **आवश्यक** था।

रखरखाव की कमी, अपशिष्ट प्रबंधन में अंतराल, और आर्थिक असमानता **स्वच्छ** भारत अभियान की प्रमुख चुनौतियाँ और कमियाँ रही हैं। इन समस्याओं ने अभियान की **प्रभावशीलता** को प्रभावित किया और यह **दर्शाया** कि केवल अवसंरचना का निर्माण पर्याप्त नहीं है। इसके साथ-साथ, इन संरचनाओं का उचित उपयोग और रखरखाव भी अत्यंत **महत्वपूर्ण** है। इसके अतिरिक्त, आर्थिक असमानता को समाप्त करने के लिए संसाधनों के वितरण और जागरूकता कार्यक्रमों की **आवश्यकता** है, ताकि स्वच्छता सुविधाएँ समाज के सभी वर्गों तक पहुँच सकें।

इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए स्थानीय नेतृत्व, सामाजिक सहयोग और सरकारी नीतियों के बीच **समन्वय** स्थापित करना अत्यंत आवश्यक है, ताकि **स्वच्छता** के उद्देश्य को दीर्घकालिक और समावेशी तरीके से प्राप्त किया जा सके।
स्वच्छ भारत मिशन के लिए सतत समाधान, तकनीकी एकीकरण, और नियमित प्रशिक्षण ऐसे प्रमुख क्षेत्र हैं जिनमें सुधार किया जा सकता है, जिससे इसकी दीर्घकालिक **स्थिरता** और प्रभावशीलता सुनिश्चित की जा सके। सार्वजनिक-निजी भागीदारी (PPP) के माध्यम से निवेश और प्रौद्योगिकी का बेहतर उपयोग किया जा सकता है, जबकि GIS और IoTजैसी आधुनिक तकनीकों का एकीकरण स्वच्छता प्रबंधन और निगरानी में सुधार ला सकता है। इसके अतिरिक्त, नियमित **प्रशिक्षण** के माध्यम से स्थानीय समुदायों और स्वच्छता कर्मियों को निरंतर जागरूक और प्रशिक्षित किया जा सकता है, जिससे स्वच्छता अभियान के लक्ष्यों को स्थायी रूप से प्राप्त किया जा सके।

स्वच्छ भारत मिशन (SBM) ने भारत में स्वच्छता के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया है, जिसके परिणामस्वरूप पूरे देश में स्वच्छता के प्रति जागरूकता बढ़ी है। 2014 में इसकी शुरुआत के बाद से, इस अभियान ने सार्वजनिक स्वच्छता, स्वास्थ्य, और पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्रों में सकारात्मक परिवर्तन लाए हैं। शौचालयों की संख्या में **उल्लेखनीय** वृद्धि, खुले में शौच की समाप्ति, और **स्वच्छता** संबंधी जागरूकता में सुधार देखा गया है। यद्यपि अभियान ने स्वच्छता लक्ष्यों की दिशा में प्रगति की है, फिर भी सतत परिणाम सुनिश्चित करने के लिए कुछ महत्वपूर्ण क्षेत्रों में निरंतरता और सुधार की आवश्यकता बनी हुई है। विशेष रूप से, व्यवहार परिवर्तन, अवसंरचना रखरखाव, और अपशिष्ट प्रबंधन के क्षेत्रों में निरंतर प्रयासों की आवश्यकता है। यह केवल सरकारी प्रयासों से ही नहीं, बल्कि सामुदायिक भागीदारी, निजी क्षेत्र की सहभागिता, और **उपयुक्त** नीतिगत हस्तक्षेपों के माध्यम से भी **प्राप्त** किया जा सकता है।

<u>संदर्भः-</u>

• स्वच्छ सर्वेक्षण रिपोर्ट्स (2014–2022): ये रिपोर्ट्स स्वच्छ भारत मिशन की प्रभावशीलता का विश्लेषण करती हैं तथा शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छता की स्थिति और सुधारों का वर्णन करती हैं। इन **रिपोर्ट्स** में स्वच्छता सेवाओं की गुणवत्ता, सफाई, और अपशिष्ट प्रबंधन में किए गए प्रयासों को प्रस्तुत किया गया है।

• जल जीवन मिशन रिपोर्ट: जल जीवन मिशन की रिपोर्ट स्वच्छता और जल **प्रबंधन** के क्षेत्रों में किए गए प्रयासों का विवरण **प्रदान** करती है।

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

इसमें जल स्रोतों की सुरक्षा और स्वच्छता प्रथाओं के माध्यम से जल स्वच्छता में सुधार हेतु उठाए गए कदमों का वर्णन किया गया है।

• WHO रिपोर्ट: स्वच्छता और स्वास्थ्य (2022): यह रिपोर्ट वैश्विक स्तर पर स्वच्छता और स्वास्थ्य के बीच संबंध को उजागर करती है। इसमें स्वच्छता उपायों के स्वास्थ्य लाभों पर प्रकाश डाला गया है और भारत में स्वच्छता क्षेत्र में उठाए गए कदमों की सराहना की गई है।

• ग्रामीण विकास मंत्रालय के आँकड़े: ग्रामीण विकास मंत्रालय के आँकड़ों के अनुसार, स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत ग्रामीण क्षेत्रों में किए गए प्रयासों की वास्तविक स्थिति और परिणामों का विवरण उपलब्ध है, जिससे अभियान की वास्तविक स्थिति का आकलन संभव होता है।

विशेष अध्ययन क्षेत्र

1. राज्य स्तर पर अभियान के प्रभाव का तुलनात्मक विश्लेषण:

अभियान की सफलता और चुनौतियाँ राज्य से राज्य में भिन्न हो सकती हैं। इसलिए, एक तुलनात्मक अध्ययन यह दिखा सकता है कि कौन-से राज्य स्वच्छता के क्षेत्र में अधिक सफल रहे हैं और उन्होंने कौन-से मॉडल और रणनीतियाँ अपनाईं। यह अध्ययन भविष्य में अभियान के पूर्वानुमान और विस्तार के लिए महत्वपूर्ण आँकड़े प्रदान कर सकता है।

2. महामारी के दौरान स्वच्छता उपायों में SBM की भूमिका:

COVID-19 महामारी के दौरान स्वच्छता के महत्व को और अधिक गहराई से महसूस किया गया। इस संदर्भ में, यह विशेष अध्ययन यह समझने में सहायता करेगा कि स्वच्छ भारत मिशन ने महामारी के दौरान स्वच्छता उपायों को कैसे बढ़ावा दिया और संक्रमण के प्रसार को रोकने में यह किस हद तक प्रभावी रहा। यह अध्ययन महामारी जैसी आपातकालीन परिस्थितियों में स्वच्छता उपायों की भूमिका